सूरह — एक कहानी

सूरह अल-अंबिया

अंबिया

पूरा सफ़र — तमाम जहानों के लिए रहमत —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 21 • 112 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इक़्तरब लिन्नासि हिसाबुहुम व हुम फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ्रिज़ून
1. लोगों का हिसाब उनके क़रीब आ गया, और वो ग़फ़लत में मुँह मोड़े हुए हैं।

लौ काना फ़ीहिमा आलिहतुन इल्लल्-लाहु ल-फ़सदता
22. अगर इन दोनों (आसमान-ज़मीन) में अल्लाह के सिवा और माबूद होते तो दोनों बर्बाद हो जाते।

व ज'अल्ना मिनल्-मा-इ कुल्ल शै-इन हय्य
30. और हमने हर ज़िंदा चीज़ को पानी से बनाया।

क़ुल्ना या नारु कूनी बर्दंव्-व सलामन 'अला इब्राहीम
69. हमने कहा: ऐ आग, इब्राहीम पर ठंडी और सलामती वाली हो जा।

ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन
87. तेरे सिवा कोई माबूद नहीं; तू पाक है; बेशक मैं ज़ालिमों में से था।

व मा अर्सल्नाक इल्ला रहमतल्-लिल्-'आलमीन
107. और हमने तुम्हें तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर ही भेजा।

उनका हिसाब क़रीब आ गया

बेटा, ये सूरह एक ऐसे जुमले से खुलती है जो एक पूरी ज़िंदगी को एक ही लाइन में तनाज़ुर में रख देता है:

'इक़्तरब लिन्नासि हिसाबुहुम व हुम फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ्रिज़ून — लोगों का हिसाब उनके क़रीब आ गया, जब कि वो ग़फ़लत में मुँह मोड़े हुए हैं।'

बेटा, उस आयत के दो हिस्से देखिए और कैसे वो एक दूसरे की ज़िद हैं। एक तरफ़: हिसाब **क़रीब** आ चुका। दूसरी तरफ़: लोग 'फ़ी ग़फ़्लह' — ग़फ़लत के अंदर, गोया एक धुँद के अंदर — और 'मुअ्रिज़ून', बा-क़ायदा मुँह मोड़ रहे।

बेटा, ग़ौर कीजिए कि '**ग़फ़्लह**' कुफ़्र नहीं। एक ग़ाफ़िल शख़्स क़ियामत के दिन पर पूरी तरह ईमान रखता हो सकता है अगर आप उसे पूछें। **वो बस कभी उस के बारे में**

सोचता नहीं। ये उसके ज़ेहन में नहीं होता जब वो चुनता, बोलता, कमाता, या अपनी शाम गुज़ारता है।

और एक बारीकी ग़ौर कीजिए, बेटा: ये कहता है **उनका** हिसाब क़रीब आ गया — सिर्फ़ ख़ुद क़ियामत नहीं। क्योंकि हर शख़्स के लिए, हिसाब उस लम्हे शुरू होता है जब उसकी अपनी ज़िंदगी ख़त्म होती है। और वो, हम में से हर एक के लिए, उस से क़रीब-तर है जितना हम फ़र्ज़ करते हैं।

'**मा यअ्तीहिम मिन ज़िक्रिम्-मिर्-रब्बिहिम मुह्दसिन इल्लस्-तम'ऊहु व हुम यल्'अबून** — उनके रब की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर ये कि वो **इसे सुनते हैं जब कि वो खेल रहे होते हैं** — **लाहियतन क़ुलूबुहुम** — उनके **दिल बे-ख़बर** (दूसरी तरफ़)।'

बेटा, ये सुने बग़ैर हासिल किए का बयान है: अल्फ़ाज़ कानों में दाख़िल होते हैं जब दिल कहीं और होता है। हम में से हर एक ये हालत जानता है — पढ़ते हुए दिन का मंसूबा बनाना, ख़ुत्बा सुनते हुए काम के बारे में सोचना।

मक्का वालों ने फिर अपने आम ए'तिराज़ दोहराए — कि ये एक ख़्वाब था, एक घढ़त, शायरी, और कि एक सच्चा रसूल पहले अंबिया की तरह एक मो'जिज़ा लाता। और अल्लाह ने जवाब दिया: '**मा आमनत क़ब्लहुम मिन क़र्यतिन अह्लक्नाहा** — उन से पहले कोई बस्ती (जब निशानी आई) ईमान न लाई जिसे हमने तबाह किया — **अ फ़-हुम युअ्मिनून** — तो क्या **ये** ईमान लाएँगे?'

बेटा, नुक़्ता ये है कि **मो'जिज़े कभी न-चाहने वालों को क़ायल न कर सके।** जिन्होंने उन्हें माँगा और फिर देखा वो फिर भी इनकार करते रहे।

अगर दूसरे ख़ुदा होते

फिर सूरह तौहीद का मुक़दमा साफ़, अक़्ली दलाइल के साथ पेश करती है, बेटा — उस क़िस्म के जिन्हें आप किसी भी गुफ़्तगू में इस्तेमाल कर सकें।

'**लविअ्-तख़ज़्ना लह्लल्-लत्तख़ज़्नाहु मिल्-लदुन्ना इन कुन्ना फ़ा'इलीन** — अगर हम कोई खेल बनाना चाहते, तो उसे अपने पास से ले लेते, अगर हमें ऐसा करना

होता।' बेटा, मतलब: **ये कायनात कोई खेल या तफ़रीह नहीं।**

'**बल नक़्ज़िफ़ु बिल्-हक़्क़िक़े 'अलल्-बातिलि फ़-यद्मग़ुहू फ़-इज़ा हुव ज़ाहिक़** — बल्कि, **हम हक़ को बातिल पर दे मारते हैं और वो उसे कुचल देता है, और वो फ़ौरन ग़ायब हो जाता है।**'

बेटा, तस्वीर की शिद्दत महसूस कीजिए: हक़ को एक पत्थर की तरह बातिल पर **दे मारा** जाता है, उसके सर पर लगता है, और बातिल बस ग़ायब हो जाता है। **इसी लिए एक मोमिन जिसके पास हक़ है उसे इस बात पर घबराने की ज़रूरत नहीं कि बातिल कितना ऊँची आवाज़ वाला है।**

और फिर मरकज़ी दलील: '**लौ काना फ़ीहिमा आलिहतुन इल्लल्-लाहु ल-फ़सदता — अगर इन दोनों (आसमान-ज़मीन) में अल्लाह के सिवा और माबूद होते, तो दोनों बर्बाद हो जाते — फ़-सुब्हानल्-लाहि रब्बिल्-'अर्शि 'अम्मा यसिफ़ून** — तो पाक है अल्लाह, अर्श का रब, उस से जो वो बयान करते हैं।'

बेटा, मंतिक़ सादा और ना-क़ाबिल-ए-जवाब है। **दो मुतलक़ इरादे एक निज़ाम पर हुक्मरानी नहीं कर सकते।** अगर दो होते, तो हर एक अपना इंतेज़ाम चाहता, और या तो एक दूसरे पर ग़ालिब आता — उस सूरत में हारने वाला कभी ख़ुदा था ही नहीं — या निज़ाम ख़ुद को फाड़ देता। **तुम्हारे ऊपर का कामिल निज़ाम ख़ुद दलील है।**

और फिर वो आयत जो उसकी मुतलक़ बादशाहत क़ायम करती है: '**ला युस्अलु 'अम्मा यफ़्'अलु व हुम युस्अलून — उस से नहीं पूछा जाता जो वो करता है, मगर उन से पूछा जाएगा।**'

बेटा, ये आयत ये नहीं कह रही कि उसके अफ़आल में कोई हिकमत नहीं — वो हिकमत से भरे हैं, और वो अल-हकीम है। ये कह रही है कि **किसी मख़्लूक़ को ये हक़ नहीं कि अपने ख़ालिक़ को कठघरे में खड़ा करे।** बर्तन कुम्हार को तलब नहीं करता।

और इस आयत में सुकून है, बेटा, हर उस शख़्स के लिए जिसने कभी पूछा 'मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?' आप समझने और सीखने के लिए पूछ सकते हैं। मगर अगर आप यूँ पूछ रहे हो जैसे आप पर ज़ुल्म हुआ हो और एक वज़ाहत आप की मुक़र्रर्रा हो —

तो ये आयत नर्मी से अंदाज़ दुरुस्त करती है। **वो हमें जवाब-देह नहीं; हम उसे जवाब-देह हैं।**

और फिर अल्लाह वो पैग़ाम बयान करते हैं जो हर नबी ने उठाया: '**व मा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिर्-रसूलिन इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इलाह इल्ला अना फ़अ्बुदून** — और हमने तुमसे पहले कोई रसूल न भेजा मगर ये कि हमने उसकी तरफ़ वही की कि **मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत करो।**'

बेटा, एक पैग़ाम, पहले नबी से आख़िरी तक। **क़ानून मुख़्तलिफ़ थे; अस्ल कभी नहीं।**

और फ़रिश्तों के बारे में, जिन्हें कुछ ने अल्लाह की बेटियाँ कहा: '**बल 'इबादुम्-मुक्रमून** — बल्कि, वो **मो'अज़्ज़ज़ बंदे** हैं — **ला यस्बिक़ूनहू बिल्-क़ौलि व हुम बि-अम्रिही यअ्मलून** — वो उस से पहले बात नहीं करते, और उसके हुक्म पर अमल करते हैं — **व हुम मिन ख़श्यतिही मुश्फ़िक़ून** — **और वो, उसके ख़ौफ़ से, डरते हैं।**'

पानी से, हर ज़िंदा चीज़

फिर सूरह तख़्लीक़ की निशानियों की तरफ़ मुड़ती है, बेटा, और एक ऐसी आयत देती है जिसने सदियों से पढ़ने वालों को हैरान किया:

'**अ व लम यरल्-लज़ीन कफ़रू अन्नस्-समावाति वल्-अर्ज़ कानता रत्क़न फ़-फ़तक़्नाहुमा** — क्या जिन्होंने कुफ़्र किया उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि **आसमान और ज़मीन एक जुड़ी हुई चीज़ थे**, और **हमने उन्हें जुदा किया** — **व ज'अल्ना मिनल्-मा-इ कुल्ल शै-इन हय्य** — **और हमने हर ज़िंदा चीज़ को पानी से बनाया** — **अ फ़-ला युअ्मिनून** — तो क्या वो ईमान नहीं लाएँगे?'

बेटा, दो हिस्से लीजिए। 'रत्क़न फ़-फ़तक़्नाहुमा' — वो एक साथ सिले हुए थे, एक के तौर पर बंद, और उसने उन्हें फाड़ दिया। और फिर: हर ज़िंदा चीज़ पानी से बनाई गई।

बेटा, हम क़ुरआन को साइंस की किताब के तौर पर नहीं पढ़ते — ये हिदायत की किताब है। मगर एक शख़्स का हक़ है कि वो हैरान हो कि एक किताब जो एक

सहरा के शहर में, उन लोगों को पढ़ी गई जिनके पास कोई आलात और कोई लेबोरेटरी न थी, ये बातें साफ़ कहती है और **कभी दुरुस्ती की मोहताज नहीं हुई।**

'**व ज'अल्ना फ़िल्-अर्ज़िं रवासिय अन तमीद बिहिम** — और हमने ज़मीन में **मज़बूत पहाड़** रखे, ताकि वो उनके साथ न हिले — **व ज'अल्ना फ़ीहा फ़िजाजन सुबुलल्-ल'अल्लहुम यह्तदून** — और उस में **खुले रास्ते** बनाए ताकि वो राह पाएँ।'

बेटा, वो दूसरा हिस्सा देखिए — पहाड़ों के **दरमियान** के दर्रे तक, वो रास्ते जो मुसाफ़िर इस्तेमाल करते हैं, एक एहसान के तौर पर नाम किए गए। किसी को इंतेज़ाम करना था कि वहाँ से गुज़रने का कोई रास्ता हो।

'**व ज'अल्नस्-समा-अ सक़्फ़म्-मह्फ़ूज़ा** — और हमने आसमान को एक **महफ़ूज़ छत** बनाया — **व हुम 'अन आयातिहा मुअ्रिज़ून** — मगर वो, उसकी निशानियों से, मुँह मोड़ते हैं।'

और फिर वो आयत जिसका हर शख़्स को आख़िर-कार सामना करना है, बेटा: '**कुल्लु नफ़्सिन ज़ा-इक़तुल्-मौत — हर जान मौत का मज़ा चखेगी — व नब्लूकुम बिश्-शर्रि वल्-ख़ैरि फ़ित्नह — और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आज़माइश के तौर पर आज़माते हैं — व इलैना तुर्जऊन** — और हमारी तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।'

बेटा, ग़ौर से ग़ौर कीजिए: 'बिश्-शर्रि वल्-ख़ैर' — **बुराई से और भलाई से** आज़माए गए। हम पहली को समझते हैं: बीमारी, नुक़सान, ग़ुर्बत। हम दूसरी भूल जाते हैं: सेहत, दौलत, कामयाबी, ता'रीफ़, फ़ारिग़ वक़्त। **ये भी इम्तेहान के पर्चे हैं — और ये ज़्यादा मुश्किल हैं, क्योंकि आराम में एक शख़्स शायद ही याद रखता है कि उसका इम्तेहान हो रहा है।**

इब्राहीम और आग

और अब, बेटा, सूरह अपनी अंबिया की क़तार शुरू करती है — और ये इब्राहीम (अलैहि0) से शुरू होती है।

'**व लक़द अतैना इब्राहीम रुश्दहू मिन क़ब्लु व कुन्ना बिही 'आलिमीन** — और हमने

यक़ीनन इब्राहीम को उस की **सही समझ** पहले ही दी थी, और हम उसे जानने वाले थे।'

उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से पूछा: '**मा हाज़िहित्-तमासीलुल्-लती अन्तुम लहा 'आकिफ़ून** — ये **बुत** क्या हैं जिनपर तुम जम कर बैठे हो?' उन्होंने कहा: हमने अपने बाप-दादा को उन्हें पूजते पाया। उसने कहा: '**लक़द कुन्तुम अन्तुम व आबाउकुम फ़ी ज़लालिम्-मुबीन** — तुम और तुम्हारे बाप-दादा खुली गुमराही में रहे।'

और फिर, बेटा, उसने एक मंसूबा बनाया, और उसे धीरे से एलान किया: '**व तल्लाहि ल-अकीदन्न अस्नामकुम ब'अ्द अन तुवल्लू मुद्बिरीन** — और **अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे बुतों के ख़िलाफ़ ज़रूर तदबीर करूँगा** जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे।'

'**फ़-ज'अलहुम जुज़ाज़न इल्ला कबीरल्-लहुम ल'अल्लहुम इलैहि यर्जिऊन** — तो उसने उन्हें **टुकड़े-टुकड़े कर दिया**, सिवाए उन के सब से **बड़े** के, ताकि वो उस की तरफ़ लौट आएँ (और उस से पूछें)।'

बेटा, इस की ज़ेहानत देखिए। उसने सब को तबाह नहीं किया। उसने सब से बड़े को खड़ा छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उस पर टाँग दी — **ताकि दलील ख़ुद बन जाए।**

वो लौट आए और ग़ुस्से में थे। '**अ अन्त फ़'अल्त हाज़ा बि-आलिहतिना या इब्राहीम** — क्या **तूने** हमारे ख़ुदाओं के साथ ये किया, ऐ इब्राहीम?'

'**क़ाल बल फ़'अलहू कबीरुहुम हाज़ा फ़स्अलूहुम इन कानू यन्तिक़ून — उसने कहा: बल्कि, इस सब से बड़े ने ये किया। तो इन से पूछो, अगर ये बोल सकते हों।**'

बेटा, वो जवाब झूठ न था; **ये एक दलील थी जिसे एक चैलेंज की शक्ल दी गई।** वो कह रहा था: तुम मुझे कहते हो ये ख़ुदा हैं — तो चलो, इन से पूछो।

'**फ़-रज'ऊ इला अन्फ़ुसिहिम फ़-क़ालू इन्नकुम अन्तुमुज़्-ज़ालिमून — तो वो अपने आप की तरफ़ लौटे** और (एक दूसरे से) कहा: **बेशक, तुम ही ज़ालिम हो।**'

बेटा, यही वो लम्हा है। 'रज'ऊ इला अन्फ़ुसिहिम' — वो अपने ही ज़ेहनों की तरफ़ लौट आए। एक लम्हे के लिए, उन्होंने इसे साफ़ देखा: **पत्थर अपनी हिफ़ाज़त नहीं**

कर सकते।

'**सुम्म नुकिसू 'अला रुऊसिहिम** — **फिर उनके सरों के बल उन्हें उलट दिया गया**' — बेटा, मतलब उनकी सोच फिर पलट गई — '**लक़द 'अलिम्त मा हा-उला-इ यन्तिक़ून** — तुम ख़ूब जानते हो कि ये बोलते नहीं!'

और इब्राहीम ने दलील बंद कर दी: '**अ फ़-तअ्बुदून मिन दूनिल्-लाहि मा ला यन्फ़'उकुम शै-अंव्-व ला यज़ुर्रुकुम** — क्या तुम अल्लाह के सिवा उस को पूजते हो जो तुम्हें न कुछ फ़ायदा देता न नुक़सान? **उफ़्फ़िल्-लकुम व लिमा तअ्बुदून मिन दूनिल्-लाह** — **तुम पर और उस पर अफ़सोस जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो! अ फ़-ला तअ्क़िलून** — तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?'

बेटा, उनके पास कोई जवाब न बचा। और जब एक शख़्स के पास कोई जवाब नहीं होता, **वो ताक़त की तरफ़ झुकता है:**

'**क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलिहतकुम इन कुन्तुम फ़ा'इलीन** — उन्होंने कहा: **इसे जला दो** और अपने ख़ुदाओं की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है।'

और फिर, बेटा, क़ुरआन की सब से शान-दार आयतों में से एक:

'**क़ुल्ना या नारु कूनी बर्दंव्-व सलामन 'अला इब्राहीम** — **हमने कहा: ऐ आग, इब्राहीम पर ठंडी और सलामती वाली हो जा।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: अल्लाह ने आग बुझाई नहीं। उन्होंने इब्राहीम को उस से निकाला नहीं। **उन्होंने ख़ुद आग को हुक्म दिया — और उसने फ़ौरन इताअत की, अपनी ही फ़ितरत के ख़िलाफ़।**

और दूसरा लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: 'व सलामन' — **और सलामती**। कुछ सलफ़ ने ग़ौर किया कि अगर अल्लाह सिर्फ़ 'ठंडी हो जा' कहते, तो ख़ुद ठंड उसे नुक़सान पहुँचाती। तो: ठंडी **और** महफ़ूज़।

बेटा, इस आयत का सबक़ सीखिए, क्योंकि ये क़ुरआन के अज़ीम सुकूनों में से एक है। **तुम्हारी ज़िंदगी की आग — वो सूरत-ए-हाल जिसके बारे में तुम्हें यक़ीन है कि वो तुम्हें जलाएगी — सिर्फ़ उसकी इजाज़त से जलती है।** वो तुम्हें उस से निकाल सकते

हैं। या वो तुम्हें ठीक वहीं खड़ा छोड़ सकते हैं जहाँ तुम हो, और बस उसे हुक्म दे सकते हैं कि न जले।

'**व अरादू बिही कैदन फ़-ज'अल्नाहुमुल्-अख़्सरीन** — और उन्होंने उसके लिए एक **तदबीर** की, **मगर हमने उन्हें सब से बड़ा घाटे वाला बना दिया।**'

दाऊद, सुलैमान, और खेत

फिर सूरह नबी-दर-नबी गुज़रती है, बेटा, और हर बयान छोटा है — क्योंकि नुक़्ता **अंदाज़** है।

लूत (अलैहि0) को फ़ैसला और इल्म दिया गया और एक ऐसी बस्ती से बचाया गया जो बुराई करती थी। नूह (अलैहि0) की सुनी गई जब उसने पुकारा, और उसे बड़े ग़म से उसके घरवालों समेत बचाया गया।

और फिर दाऊद और सुलैमान (अलैहिमस्सलाम), और फ़ैसले के बारे में एक वाक़िआ: '**व दाऊद व सुलैमान इज़ यह्कुमानि फ़िल्-हर्सि इज़ नफ़शत फ़ीहि ग़नमुल्-क़ौम** — और दाऊद और सुलैमान, जब उन्होंने **खेत** के बारे में फ़ैसला किया जब एक क़ौम की भेड़ें रात को उस में **चर गईं** — **व कुन्ना लि-हुक्मिहिम शाहिदीन** — और हम उनके फ़ैसले के गवाह थे।'

'**फ़-फ़ह्हम्नाहा सुलैमान — और हमने इसकी समझ सुलैमान को दी — व कुल्लन अतैना हुक्मंव्-व 'इल्मा — और हर एक को** हमने फ़ैसला और इल्म दिया।'

बेटा, अल्फ़ाज़ ग़ौर से देखिए, क्योंकि उस में अज़ीम अदब है। सुलैमान का फ़ैसला ज़्यादा मुनासिब था — और फिर भी अल्लाह फ़ौरन कहते हैं कि **दोनों** को हिकमत और इल्म दिया गया।

तो जब एक छोटा शख़्स किसी मामले को एक बड़े से ज़्यादा साफ़ देखता है, **तो बड़े की क़द्र कम नहीं होती।** और रिवायात कहती हैं कि दाऊद (अलैहि0) ने अपने बेटे की राय बिना रंजिश क़ुबूल की। बेटा, यही अज़मत है: **अपने ही बच्चे से दुरुस्त किया जाना और उस पर ख़ुश होना।**

और दाऊद के बारे में: '**व सख़्ख़र्ना म'अ दाऊदल्-जिबाल युसब्बिह्न वत्-तैर** — और हमने पहाड़ों को दाऊद के साथ तस्बीह करने के लिए मुसख़्ख़र किया, और परिंदों को — **व कुन्ना फ़ा'इलीन** — और हम करने वाले थे।' और: '**व 'अल्लम्नाहु सन्'अत लबूसिल्-लकुम लि-तुह्सिनकुम मिम्-बअ्सिकुम** — और हमने उसे तुम्हारे लिए **ज़िरहें** बनाने का हुनर सिखाया ताकि तुम्हें तुम्हारी (अपनी) **लड़ाई से बचाए** — **फ़-हल अन्तुम शाकिरून** — तो क्या तुम शुक्र-गुज़ार हो?'

बेटा, जुमला ग़ौर कीजिए: तुम्हें बचाने के लिए 'मिम्-बअ्सिकुम' — **तुम्हारी अपनी लड़ाई से।** ज़िरह की ज़रूरत इस लिए पड़ी जो इंसान एक दूसरे के साथ करते हैं।

अय्यूब, यूनुस, और ज़करिया

और अब, बेटा, सूरह क़ुरआन की तीन सब से अहम दुआएँ देती है — तीन अलग क़िस्म की तकलीफ़ों में तीन नबी। तीनों सीखिए।

पहले, अय्यूब (अलैहि0), बीमारी और नुक़सान में: '**व अय्यूब इज़ नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्-ज़ुर्रु व अन्त अर्हमुर्-राहिमीन** — और अय्यूब, जब उसने अपने रब को पुकारा: **बेशक, मुझे तकलीफ़ पहुँची है, और तू सब से ज़्यादा रहम करने वाला है।**'

बेटा, इस दुआ का अदब देखिए। दो बातें, कोई दरख़्वास्त नहीं। वो अपनी हालत बयान करता है — 'तकलीफ़ मुझे पहुँची' — और फिर अपने रब को बयान करता है — 'तू सब से ज़्यादा रहम करने वाला'। **वो ये नहीं कहता 'तो मुझे शिफ़ा दे'। वो अपनी ज़रूरत उसकी रहमत के साथ रख देता और बोलना बंद कर देता है।**

'**फ़स्तजब्ना लहू फ़-कशफ़्ना मा बिही मिन ज़ुर्र** — **तो हमने उसकी सुन ली और जो तकलीफ़ उसे थी उसे दूर कर दिया** — **व अतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम म'अहुम** — और हमने उसे उसके घरवाले और उनके साथ उन जितने और दिए — **रहमतम्-मिन 'इन्दिना व ज़िक्रा लिल्-'आबिदीन** — अपनी तरफ़ से **रहमत** और इबादत-गुज़ारों के लिए एक **याद-दहानी** के तौर पर।'

दूसरे, बेटा — यूनुस (अलैहि0), अंधेरों में: '**व ज़न्-नूनि इज़ ज़हब मुग़ाज़िबन** — और (याद करो) मछली वाले को, जब वो **ग़ुस्से** में चला गया — **फ़-ज़न्न अल्-**

लन्-नक़्दिर 'अलैह — और समझा कि हम उस पर (कोई तंगी) तय न करेंगे — **फ़-नादा फ़िज़्-ज़ुलुमात — और उसने अंधेरों में पुकारा।**'

बेटा, 'फ़िज़्-ज़ुलुमात' — **अंधेरों**, जमा। उलमा ने कहा: रात का अंधेरा, समंदर का अंधेरा, और मछली के अंदर का अंधेरा। तह दर तह, बिना किसी रास्ते के और बिना किसी को पुकारने के।

'**अल्-ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन — तेरे सिवा कोई माबूद नहीं; तू पाक है। बेशक, मैं ज़ालिमों में से था।**'

बेटा, तीन हिस्से ग़ौर कीजिए, और ग़ौर कीजिए क्या ग़ायब है। तौहीद: तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तस्बीह: तू पाक है। इक़रार: मैं ज़ालिमों में से था।

और उस में **कोई दरख़्वास्त नहीं**। वो रिहाई नहीं माँगता। वो अपने रब की तस्दीक़ करता, उसे हर ऐब से पाक कहता, और ख़ुद को इल्ज़ाम देता है।

'**फ़स्तजब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनल्-ग़म्म — तो हमने उसकी सुन ली और उसे ग़म से बचा लिया — व कज़ालिक नुन्जिल्-मुअ्मिनीन — और इसी तरह हम मोमिनीन को बचाते हैं।**'

बेटा, वो आख़िरी जुमला देखिए: 'और **इसी तरह** हम **मोमिनीन** को बचाते हैं' — जमा, आम, जारी। ये एक नबी के लिए एक-बार का बचाव न था; **ये एक बयान-शुदा तरीक़ा है।** नबी ﷺ ने फ़रमाया कि कोई मुसलमान कभी यूनुस की दुआ से किसी चीज़ के लिए दुआ नहीं करता मगर ये कि अल्लाह उसे जवाब देते हैं।

बेटा, इसे आज रात याद कर लीजिए: 'ला इलाह इल्ला अन्त, सुब्हानक, इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन।'

तीसरे, बेटा — ज़करिया (अलैहि0), बे-औलाद और बूढ़े: '**व ज़करिय्या इज़ नादा रब्बहू रब्बि ला तज़र्नी फ़र्दव्-व अन्त ख़ैरुल्-वारिसीन** — और ज़करिया, जब उसने अपने रब को पुकारा: **मेरे रब, मुझे अकेला मत छोड़, और तू सब से बेहतर वारिस है।**'

बेटा, फिर वही अदब: वो ये नहीं कहता 'मुझे एक बेटा दे'। वो कहता है 'मुझे अकेला मत छोड़' — और फिर फ़ौरन बढ़ाता है कि अगर तू (न दे भी) तो तू सब से बेहतर

वारिस है। **ख़ुद दरख़्वास्त के अंदर मुकम्मल सुपुर्दगी।**

'**फ़स्तजब्ना लहू व वहब्ना लहू यह्या व अस्लह्ना लहू ज़ौजह** — तो हमने उसकी सुन ली और उसे **यह्या** दिया और **उसकी बीवी को उसके लिए** ठीक कर दिया।'

और फिर अल्लाह बयान करते हैं कि तीनों में क्या मुश्तरक था, बेटा — और यही इस सब की कुंजी है:

'**इन्नहुम कानू युसारि'ऊन फ़िल्-ख़ैराति व यद्'ऊनना रग़बंव्-व रहबा** — बेशक, वो **नेकियों में जल्दी** करते थे और हमें **उम्मीद और ख़ौफ़** से **पुकारते** थे — **व कानू लना ख़ाशि'ईन — और वो हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे।**'

बेटा, ये उन लोगों का ख़ाका है जिनकी दुआएँ क़ुबूल होती हैं: **वो भलाई की तरफ़ दौड़ते, वो अल्लाह को उम्मीद और ख़ौफ़ दोनों से पुकारते, और वो उसके सामने आजिज़ थे।**

और मरयम (अलैहि0) के बारे में: '**वल्-लती अह्सनत फ़र्जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहा मिर्-रूहिना व ज'अल्नाहा वब्नहा आयतल्-लिल्-'आलमीन** — और वो जिसने अपनी **पाक-दामनी** की हिफ़ाज़त की, तो हमने उस में अपनी रूह से फूँका और उसे और उसके बेटे को **जहानों के लिए एक निशानी** बनाया।'

और फिर वो आयत जो उन सब को जमा करती है: '**इन्न हाज़िही उम्मतुकुम उम्मतंव्-वाहिदतंव्-व अना रब्बुकुम फ़अ्बुदून — बेशक, ये तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो मेरी इबादत करो।**'

बेटा, उन सब ने — इब्राहीम, नूह, लूत, दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूनुस, ज़करिया, यह्या, मरयम और 'ईसा — **एक उम्मत, एक रब, एक पैग़ाम।**

तमाम जहानों के लिए रहमत

फिर सूरह चीज़ों का अंजाम बयान करती है: याजूज और माजूज की आड़ खोल दी गई; सच्चा वादा क़रीब आता; आसमान 'रिकॉर्ड के तूमार की तरह लपेटा गया'; और तख़्लीक़ का दोबारा वैसा किया जाना जैसे शुरू की गई।

और ये विरासत बयान करती है: '**व लक़द कतब्ना फ़िज़्-ज़बूरि मिम्-ब'अ्दिज़्-ज़िक्रि अन्नल्-अर्ज़ यरिसुहा 'इबादियस्-सालिहून** — और हमने ज़बूर में, ज़िक्र (पहली किताब) के बाद, लिख दिया कि **ज़मीन के वारिस मेरे नेक बंदे होंगे।**'

बेटा, दुनिया किसी भी सदी में जैसी भी लगे, **विरासत का दस्तावेज़ पहले ही लिखा जा चुका।**

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जिसके लिए ये सूरह सब से ज़्यादा महबूब है — और ये हमारे नबी ﷺ का बयान है:

'**व मा अर्सल्नाक इल्ला रहमतल्-लिल्-'आलमीन — और हमने तुम्हें तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर ही भेजा।**'

बेटा, हर लफ़्ज़ के साथ बैठिए।

'व मा अर्सल्नाक **इल्ला**' — हमने तुम्हें इस के **सिवा** न भेजा। मतलब: **ये उनकी एक सिफ़त नहीं; ये उनका मक़्सद है।** रहमत कोई चीज़ नहीं जो उनके पास थी — ये वो है जिसे **बना** कर वो **भेजे** गए।

'**रहमतन**' — ना-मुअय्यन, बे-क़ैद: एक ऐसी रहमत जो बयान से परे है।

'**लिल्-'आलमीन**' — **जहानों** के लिए। अरबों के लिए नहीं। मोमिनीन के लिए नहीं। सिर्फ़ इंसानियत के लिए तक नहीं। जहानों के लिए — उन सब, उन समेत जिन्होंने उन्हें रद्द किया, और उन जानवरों समेत जिनके साथ सुलूक का उसने इतनी नर्मी से क़ानून बनाया जो दुनिया ने नहीं देखा था।

बेटा, और देखिए ये उनकी ज़िंदगी में कैसे ज़ाहिर हुआ। जब उनके अपने शहर ने उन्हें निकाल दिया और उन पर पत्थर फेंके जब तक उनकी जूतियाँ ख़ून से भर न गईं, और उन्हें उस क़ौम की तबाही पेश की गई, तो उन्होंने ना कहा — और दुआ की कि अल्लाह उनकी नस्ल से ऐसे लोग लाए जो सिर्फ़ उसकी इबादत करें। **वही नस्ल वजह है कि आज उम्मत का बड़ा हिस्सा मौजूद है।**

जब मक्का आख़िर-कार फ़तह हुआ और हर वो आदमी जिसने उनके सहाबा को अज़ाब दिया था उनके सामने फ़ैसले का इंतेज़ार करता खड़ा था, उन्होंने कहा:

जाओ, तुम आज़ाद हो।

उन्होंने जंग में औरतों, बच्चों और बूढ़ों के क़त्ल से, और दरख़्त काटने से, और एक चींटी के घर जलाने से मना किया। उन्होंने फ़रमाया कि एक औरत एक बिल्ली के सबब आग में गई जिसे उसने बंद रखा, और एक गुनहगार आदमी एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने पर बख़्श दिया गया।

बेटा, यही 'रहमतल्-लिल्-'आलमीन' अमल में है।

और बेटा, अपने लिए इसका मतलब समझिए। **अगर वो एक रहमत बना कर भेजे गए, तो तुम जितनी ज़्यादा रहमत उठाओगे, उतना ही तुम उनसे मिलते हो — और एक शख़्स जितना सख़्त और हक़ारत-भरा है, वो सुन्नत से उतना ही दूर बह गया, चाहे वो उसका कितना भी ज़ाहिरी हिस्सा दिखाए।**

'**क़ुल इन्नमा यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्-वाहिद** — कहो: मुझपर सिर्फ़ ये वही की जाती है कि तुम्हारा माबूद **एक माबूद** है — **फ़-हल अन्तुम मुस्लिमून** — **तो क्या तुम मुसलमान (फ़रमाँबरदार) होगे?**'

और सूरह नबी ﷺ को ये सिखाए जाने पर ख़त्म होती है कि जब लोग मुँह मोड़ने पर इसरार करें तो क्या कहें: '**क़ाल रब्बिह्कुम बिल्-हक़्क़** — उसने कहा: मेरे रब, **हक़ के साथ फ़ैसला कर** — **व रब्बुनर्-रहमानुल्-मुस्त**'आनु '**अला मा तसिफ़ून** — **और हमारा रब रहमान है, वो जिस की मदद उस के ख़िलाफ़ माँगी जाती है जो तुम बयान करते हो।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए ये कैसे ख़त्म होती है। वो उन्हें बद्-दुआ नहीं देते। वो एक इंसाफ़-भरे फ़ैसले की दरख़्वास्त करते और अपने रब को **अर्-रहमान** — सब से ज़्यादा रहम करने वाला — और उस ज़ात के तौर पर नाम लेते हैं जिसकी मदद वो माँगते हैं।

वो सूरह जो ग़ाफ़िल लोगों के मुँह मोड़ने से शुरू हुई उस रहमत पर ख़त्म होती है जो फिर भी उनके पास भेजी गई।

इस सूरह से क्या सीखा

1. 'ग़फ़्लह' कुफ़्र नहीं — ये हिसाब पर ईमान रखना और उस के बारे में कभी एक बार भी न सोचना है।

2. हक़ को बातिल पर दे मारा जाता और बातिल ग़ायब हो जाता है: बातिल कितना ऊँची आवाज़ वाला है, उस पर मत घबराओ।

3. 'उस से नहीं पूछा जाता जो वो करता है' — तुम समझने को पूछ सकते हो, मगर कभी यूँ नहीं जैसे कोई वज़ाहत तुम्हारी मुक़र्रर हो।

4. तुम्हें बुराई के साथ साथ भलाई से भी आज़माया जाता है — और आराम ज़्यादा मुश्किल पर्चा है, क्योंकि उस दौरान कोई इम्तेहान महसूस नहीं करता।

5. अल्लाह ने आग बुझाई नहीं; उन्होंने उसे कहा कि न जले। तुम्हारी आग सिर्फ़ उसकी इजाज़त से जलती है।

6. तीन दुआएँ सीखो: अय्यूब की (ज़रूरत बयान करो, उसकी रहमत की ता'रीफ़), यूनुस की (तौहीद, तस्बीह, इक़रार — कोई दरख़्वास्त नहीं), और ज़करिया की ('मुझे अकेला मत छोड़')।

7. वो ﷺ एक रहमत बना कर भेजे गए, सिर्फ़ एक रहमत के साथ नहीं — तो एक शख़्स जितना सख़्त हो, वो उनसे उतना ही दूर बह गया।

ला इलाह इल्ला अन्त, सुब्हानक, इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन — या अल्लाह, हमें वैसे बचाइए जैसे आप मोमिनीन को बचाते हैं, और हमें रहमत के लोग बना दीजिए। आमीन।